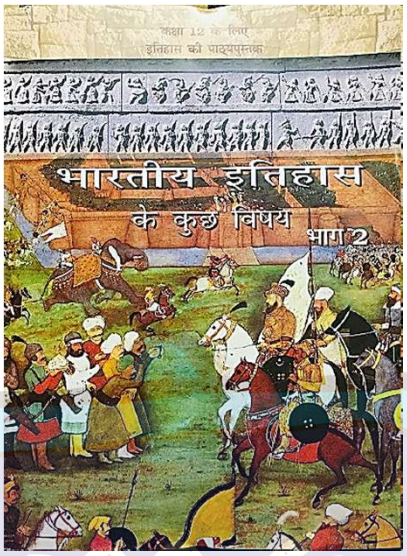



## सामान्यतया मानव द्वारा की जाने वाली यात्राओं के कारण :-



- कार्य की तलाश
- प्राकृतिक आपदाओं से बचाव
- व्यापारिक कारणों से
- सैनिक के रूप में
- पुरोहितों के रूप में
- तीर्थ यात्रियों के रूप में
- साहसिक यात्राऐं (वासको-डि-गामा, कोलम्बस)

## यात्रा वृत्तान्त लिखे जाने के कारण :-

- भौतिक परिवेश में भिन्नता/अन्तर
- प्रथाओं में भिन्नता
- भाषाओं में भिन्नता

## यात्रा वृत्तान्त की विषय वस्तु :-

- **वृत्तान्त :-** विवरण
- **यात्रा वृत्तान्त :-** यात्रा के दौरान यात्रियों द्वारा लिखे गये विवरण
- दरबार की गतिविधियों से संबंधित
- धार्मिक विषयों से संबंधित
- स्थापत्य से संबंधित
- स्मारकों से संबंधित

**इस अध्याय में तीन महत्वपूर्ण यात्रियों के वृतान्तों का अध्ययन करेंगे :-**



### 1. अल-बिरूनी

- ग्यारहवीं शताब्दी में - उज्बेकिस्तान से
- सुल्तान महमूद गजनवी के साथ भारत आए।
- **पुस्तक :-** किताब-उल-हिन्द (अरबी भाषा)



### 2. इब्न बतूता

- चौदहवीं शताब्दी में - मोरक्को (तैंजियर) से भारत आया
- **पुस्तक :-** रिह्ला

### 3. फ्रांस्बा बर्नियर



- सत्रहवीं शताब्दी - फ्रांस से भारत आए।
- इनके यात्रा वृत्तान्तों से मध्यकालीन भारत के सामाजिक जीवन के बारे में महत्वपूर्ण जानकारी मिलती है।
- **पुस्तक :-** ट्रेवल्स इन मुगल इण्डिया

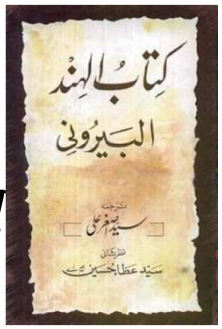
Download MISSION GYAN App Now from Play Store

## अल - बिरूनी तथा किताब-उल-हिन्द

**अल-बिरूनी का जन्म -** 973 ई. में उज़्बेकिस्तान में स्थित ख्वारिज्म में (शिक्षा का महत्त्वपूर्ण केन्द्र)

**भाषाओं का ज्ञान -** सीरियाई, फारसी, हिब्रू तथा संस्कृत

- प्लेटो तथा अन्य यूनानी दार्शनिकों के कार्यो से भी परिचित।
- 1017 ई. में सुल्तान महमूद गजनवी का ख्वारिज्म पर आक्रमण हुआ।
- जिसमें वह कई विद्वानों व व्यक्तियों को अपने साथ बन्धक बनाकर गजनी ले गया। 70 वर्ष की आयु में मृत्यु तक बाकी जीवन गजनी में बिताया।




- पंजाब के गजनवी साम्राज्य का हिस्सा बन जाने के बाद स्थानीय लोगो से आपसी विश्वास, समझ व सम्पर्क बढ़ा।
- अल-बिरूनी ने ब्राह्मण पुरोहितो तथा विद्वानों के साथ कई वर्ष बिताये व संस्कृत, धर्म तथा दर्शन का ज्ञान प्राप्त किया।
- संभवतः पंजाब व उत्तर भारत के कई हिस्सों में यात्रा की।
- अल-बिरूनी के वृत्तान्त सहारा रेगिस्तार से लेकर उत्तर में वोल्गा नदी तक फैले क्षेत्रों से सम्बन्धित हैं।
- वोल्गा नदी-यूरोप व यूरोपीय रूस की सबसे लम्बी नदी है जो कैस्पियन सागर में गिरती है।

## किताब-उल-हिन्द

❖ **लेखक-अल-बिरूनी**

- अरबी भाषा में लिखा गया एक विस्तृत ग्रन्थ है।
- भाषा-सरल व स्पष्ट
- 80 अध्याय में विभाजित

LETS LEARN TOGETHER

**विषय :-** धर्म व दर्शन, त्यौहार, खगोल विज्ञान, मूर्तिकला, कानून, मापतंत्र विज्ञान, रीति-रिवाजो, प्रथाओं ।

**लेखन की विशिष्ट शैली-**

❖ **प्रारंभ में एक प्रश्न होता है।**

- व फिर संस्कृतवादी परम्पराओं पर आधारित वर्णन और अंत में अन्य संस्कृतियों के साथ तुलना।
- अल बिरूनी संस्कृत, पाली तथा प्राकृत ग्रंथो के अरबी भाषा में अनुवाद तथा रूपान्तरणों से परिचित था। इनमें दन्तकथाओं से लेकर खगोल-विज्ञान, चिकित्सा सम्बन्धी ग्रन्थ भी शामिल थे। लेखन शैली के विषय में इनका दृष्टिकोण आलोचनात्मक था क्योंकि वह उनमे सुधार करना चाहता था।
- कई भाषाओं में दक्ष होने के कारण अल-बिरूनी को भाषाओं की तुलना व अनुवाद में महारत हासिल थी।
- उसने पंतजलि के व्याकरण सहित कई संस्कृत ग्रन्थों का अरबी भाषा में अनुवाद किया। अपने ब्राह्मण मित्रों के लिए उसने यूक्लिड (एक यूनानी गणितज्ञ) के कार्यो का संस्कृत में अनुवाद किया।

**"हिन्दु शब्द की उत्पत्ति"**

- 'हिन्दु' शब्द का उपयोग लगभग छठी-पाँचवी शताब्दी ई. पू. में प्रयुक्त होने वाले एक प्राचीन फारसी शब्द, जिसका प्रयोग सिन्धु नदी के पूर्व के क्षेत्र के लिये होता था, से निकला है। अरबी लोगो ने इस फारसी शब्द को जारी रखा और इस क्षेत्र को 'अल-हिन्द' तथा यहाँ के निवासियो को 'हिन्दी' कहा।
- कालान्तर में तुर्को ने सिंधु से पूर्व रहने वालो को 'हिन्दू', उनके निवास को हिन्दुस्तान तथा इनकी भाषा को 'हिन्दवी' नाम दिया।

LET'S LEARN TOGETHER

- इनमें से कोई भी शब्द लोगों की धार्मिक पहचान का द्योतक नहीं था। इस शब्द का धार्मिक संदर्भ में प्रयोग बहुत बाद की बात है।




## इब्न बतूता का रिह्ला

- इब्न बतूता मोरक्को (तैंजियर) से 14वीं शताब्दी में भारत आया था ।
- दिल्ली के सुल्तान मुहम्मद बिन तुगलक के समय भारत आया।
- इब्न बतूता द्वारा अरबी भाषा में लिखा गया
- यात्रा वृतान्त रिह्ला कहा जाता है।
- इसमें चौंदहवी शताब्दी में भारतीय उपमहाद्वीप के सामाजिक तथा सांस्कृतिक जीवन के विषय में प्रचुर व रोचक जानकारियाँ प्राप्त होती है।
- इसका जन्म तैंजियर के सबसे सम्मानित व शिक्षित परिवारों में से एक, जो शरिया अथवा इस्लामी कानूनों पर अपनी विशेषज्ञता के लिए प्रसिद्ध था, में हुआ था ।
- इब्न बतूता ने कम उम्र में ही साहित्यिक व शास्त्ररूढ़ शिक्षा प्राप्त कर ली थी।
- इन्हें यात्राओं का शौक था, उसने नये-नये देशों व लोगों को जानने के लिए दूर-दूर की यात्राऐं की।

LET'S LEARN TOGETHER

- वह पुस्तकों से प्राप्त ज्ञान के स्थान पर यात्राओं से अर्जित अनुभव को ज्ञान का महत्वपूर्ण स्त्रोत मानता था ।
- भारत आने से पूर्व वह मक्का की तीर्थ यात्रा, सीरिया, इराक, फारस, यमन, ओमान तथा अफ्रीका के कई प्रदेशों की यात्रा कर चुकाथा।
- मध्य एशिया के रास्ते 1333 ई. में स्थल मार्ग से सिंध पहुँचा।
- दिल्ली के सुल्तान मुहम्मद बिन तुगलक की ख्याति से प्रभावित होकर मुल्तान व उच्छ के रास्ते दिल्ली पहुंचा।
- सुल्तान ने इब्न बतूता की विद्वता से प्रभावित होकर उसे दिल्ली का काजी या न्यायाधीश नियुक्त कर दिया।
- सुल्तान से गलतफहमी होने पर उसे कारागार में डाल दिया गया।
- गलतफहमी दूर होने पर पुनः काज़ी पद पर पदस्थापित किया गया ।
- 1342 में मंगोल शासक के पास सुल्तान के दूत के रूप में जाने का आदेश दिया ।
- इब्न बतूता मध्य भारत के रास्ते मालाबार तट की ओर गया तथा वहां से मालद्वीप गया जहां वह 18 माह तक काजी के पद पर रहा। बंगाल व असम की यात्रा की।
- जहाज से सुमात्रा होते हुए चीनी बन्दरगाह जायतुन (आधुनिक नाम-क्वानझू) बन्दरगाह गया।
- 1347 ई. में चीन से वापसी।
- चीन के विषय में इब्न बतूता के वृतान्त की तुलना मार्को पोलो के वृतान्त से की जाती है। जिससे 13वीं शताब्दी में वेनिस से चलकर, चीन व भारत की यात्रा की थी ।

Download MISSION GYAN App Now from Play Store

- इब्न बतूता के अनुसार उस समय यात्रा करना कठिन व जोखिम भरा कार्य था, उसके अनुसार-
  मुल्तान से दिल्ली – 40 दिन
  सिंध से दिल्ली – 50 दिन
  दौलतावाद से दिल्ली - 40 दिन
- जबकि ग्वालियर से दिल्ली की दूरी 10 दिन में तय की जा सकती थी ।
- मुल्तान से दिल्ली यात्रा के दौरान उसके कारवाँ पर आक्रमण हुआ जिसमें वह घायल हो गया।
- वापस मोरक्को पहुँचने पर स्थानीय शासक के निर्देश पर उसकी कहानियों को दर्ज किया गया।

## घोंसले से निकलता पक्षी

यह रिह्ला से लिया गया एक उद्धरण है। अपने जन्म स्थान तैंजियर से मेरा प्रस्थान गुरुवार को हुआ... मैं अकेला ही निकल पड़ा, बिना किसी साथी यात्री... या कारवाँ के जिसकी टोली में मैं शामिल हो सकूँ, लेकिन अपने अंदर एक अधिप्रभावी आवेग और इन प्रसिद्ध पुण्यस्थानों को देखने की इच्छा जो लंबे समय से मेरे अंतःकरण में थी, से प्रभावित होकर । इसलिए मैंने अपने प्रियजनों को छोड़ जाने के निश्चय को दृढ़ किया और अपने घर को ऐसे ही छोड़ दिया जैसे पक्षी अपने घोंसलों को छोड़ देते हैं... उस समय मेरी उम्र बाईस वर्ष थी । इब्न बतूता 1354 में घर वापस पहुँचा, अपनी यात्रा आरंभ करने के लगभग तीस वर्ष बाद ।

LET'S LEARN TOGETHER

## शिक्षा तथा मनोरंजन :-

- इब्न बतूता के यात्रा वृतान्तों/ संस्मरणों को लेखबद्ध करने हेतु राजा ने इब्न जुजाई को नियुक्त किया।
- इब्न जुजाई प्रस्तावना में लिखता है कि राजा ने एक शालीन निर्देश दिया कि वे (इब्न बतूता) अपनी यात्रा में देखे गये शहरों का, अपनी स्मृति में बैठ गयी रोचक घटनाओं का एक वृतान्त लिखवायें।
- इब्न बतूता के पद चिन्हों पर चलते हुए 1400 से 1800 के मध्य भारत आये यात्रियों ने फारसी में कई यात्रा वृतान्त लिखे जिसमें अब्दुल रज्जाक समककंदी का वर्णन बहुत महत्वपूर्ण है जिससे 15वीं शताब्दी में विजय नगर साम्राज्य की महत्वपूर्ण जानकारी प्राप्त होती है।
- 1620 ई. में महमूद वली बल्खी - भारत से सम्मोहित होकर कुछ समय सन्यासी भी बन गये थे।
- 1740 ई. में शेख अली हाजिन ने उत्तर भारत की यात्रा की।

## यूरोपीय यात्री

- लगभग 1500 ई. में पुर्तगालियों का भारत में आगमन हुआ (1498 ई. में वास्को डी गामा कालीकट पहुंचा)
- इन यात्रियों में से कई लोगों ने भारतीय रीति- रिवाजों तथा धार्मिक प्रथाओं के विषय में विस्तृत वृत्तान्त लिखें।
- जेसुइट रॉबर्टो नोविली ने तो भारतीय ग्रंथों का यूरोपीय भाषाओं में अनुवाद भी किया।
- सबसे प्रसिद्ध यूरोपीय लेखकों में दुआर्ते बरबोसा का नाम है

Download MISSION GYAN App Now from Play Store

- 1600 ई. के बाद बड़ी संख्या में डच, अंग्रेज व फ्रांसीसी यात्री भारत आये।
- फ्रांसीसी जौहरी ज्यों - बैप्टिस्ट तैवर्नियर ने कम से कम 6 बार भारत की यात्रा की। वह भारत की व्यापारिक स्थिति से बहुत प्रभावित था तथा उसने भारत की तुलना ईरान व ऑटोमन साम्राज्य से की है।
- इटालवी चिकित्सक मनूकी यूरोप वापस नहीं गये व भारत में ही बस गये ।

## फ्रांस्वा बर्नियर

- फ्रांस का निवासी फ्रांस्वा बर्नियर एक चिकित्सक, राजनीतिज्ञ, दार्शनिक तथा एक इतिहासकार थे।
- वह मुगल साम्राज्य में अवसरों की तलाश में भारत आया।
- 1656 ई. से 1668 ई. तक मुगल दरबार से नजदीकी से जुड़ा रहा ।
- सम्राट शाहजहाँ के ज्येष्ठ पुत्र द्वारा शिकोह के चिकित्सक के रूप में कार्य किया था।
- बाद में आर्मीनियाई अमीर दानिशयंद खान के साथ बुद्धिजीवी व दार्शनिक के रूप में कार्य किया।

**पुस्तक :- ट्रेवल्स इन मुगल एम्पायर**

## "पूर्व" और "पश्चिम" की तुलना

- बर्नियर ने देश के कई भागों की यात्रा की एवं उसे अपने वर्णन में शामिल किया ।
- · भारतीय प्रदेशों के वर्णन की तुलना वह यूरोपीय स्थिति से करता था।
- लगभग प्रत्येक दृष्टांत / वर्णन में उसने भारतीय विकास की स्थिति को यूरोप के मुकाबले दयनीय/कमजोर बताया है।

LET'S LEARN TOGETHER

- हालांकि उसका वर्णन/आंकलन सदैव सटीक नहीं था।
- बर्नियर के मुगल सेना के साथ कई यात्राएँ की। कश्मीर कूच के वर्णन को उसने अपने वृत्तान्त में शामिल किया है।
- बर्नियर ने अपनी प्रमुख कृति को फ्रांस के शासक लुई चौदह को समर्पित किया।
- बर्नियर के कार्यों का फ्रांस में 1670-71 में प्रकाशन हुआ था।
- अगले 5 वर्षों में अंग्रेजी, डच, जर्मन तथा इतालवी भाषा में अनुवाद हो गया।
- 1670 से 1725 में मध्य बर्नियर का वृत्तान्त आठ (8) बार पुनमुर्द्रित हो चुका तथा 1684 तक तीन (3) बार अंग्रेजी में पुनमुर्द्रित हुआ था।

## अल-बिरूनी तथा संस्कृतवादी परम्परा

- विदेशी यात्रियों ने उपमहाद्वीप में जो भी देखा, सामान्तः उसकी तुलना उन्होंने उन प्रथाओं से की जिनसे वे परिचित थे ।
- अल-बिरूनी अपने लिए निर्धारित उद्देश्य में निहित समस्याओं से परिचित था जो उसके अनुसार समझ में बाधक तत्व थे।
  1. पहला अवरोध भाषा था। उसके अनुसार संस्कृत, अरबी व फारसी से इतनी भिन्न थी कि विचारों व सिद्धांतों को एक भाषा से दूसरी में अनुवादित करना आसान नहीं था ।
  2. दूसरा अवरोध धार्मिक अवस्था और प्रथा में भिन्नता थी।
  3. तीसरा अवरोध अभिमान था ।
- अल बिरूनी समस्याओं से परिचित होते हुए भी लगभग पूरी तरह से ब्राह्मणों द्वारा रचित कृतियों पर आश्रित रहा।

Download MISSION GYAN App Now from Play Store

- अल-बिरूनी ने भारतीय समाज को समझने के लिए अक्सर वेदों, पुराणों, भगवत्गीता, पतंजलि की कृतियों तथा मनुस्मृति आदि से अंश उद्धृत किए ।

## अल-बिरूनी का जाति व्यवस्था का विवरण

- अन्य समुदायों में प्रतिरूपों की खोज के माध्यम से जाति व्यवस्था को समझने व व्याख्या करने का प्रयास किया।
- उसके अनुसार प्राचीन फारस में चार सामाजिक वर्गों को मान्यता थी
  - घुड़सवार और शासक वर्ग
  - भिक्षु, आनुष्ठानिक पुरोहित तथा चिकित्सक
  - खगोल शास्त्री तथा अन्य वैज्ञानिक तथा
  - कृषक तथा शिल्पकार
- उसने यह दिखाने का प्रयास किया कि सामाजिक वर्ग केवल भारत तक ही सीमित नहीं थे ।
- उसने यह भी दिखाने का प्रयास भी किया कि इस्लाम में सभी लोगों को समान माना जाता था उनमें भिन्नता केवल धार्मिकता के पालन में थी ।
- जाति व्यवस्था के सम्बन्ध में ब्राह्मणवादी व्याख्या को माना, परन्तु
- अपवित्रता की मान्यता को अस्वीकार किया-

**'हर वस्तु जो अपवित्र हो जाती है, अपनी पवित्रता " की मूल स्थिति को पुनः प्राप्त करने का प्रयास करती है और सफल होती है।' "**

- वह जाति व्यवस्था में सन्निहित अपवित्रता की अवधारणा को प्रकृति के नियमों के विरुद्ध मानता था।

# वर्ण व्यवस्था

- अल-बिरूनी ने भारतीय वर्ण व्यवस्था का वर्णन निम्नानुसार किया है-

1. ब्राह्मण :-
    - अल बिरूनी के अनुसार ब्रह्मण सर्वोच्च वर्ण था।
    - उत्पत्ति आदि देव ब्रह्मा के मुख से
    - मुख का स्थान सबसे उच्च माना गया है।
    - इसी कारण हिन्दु जाति में सबसे उच्च स्थान दिया गया है।

2. क्षत्रिय :-
    - क्षत्रियों की उत्पत्ति आदिदेव ब्रह्मा के कन्धों व हाथों से ।
    - मुख के बाद द्वितीय स्थान कन्धों व बाहों का है।
    - वर्ण व्यवस्था में ब्राह्मणों के बाद द्वितीय स्थान पर रखा गया है।

3. वैश्य :-
    - वैश्य वर्ण की उत्पत्ति आदि देव ब्रह्मा के उदर व जंघा से मानी जाती है ।

- 4. शूद्र :-
    - शूद्र वर्ण की उत्पत्ति आदि देव ब्रह्मा के चरणों से मानी गई है।
    - वर्ण व्यवस्था में अंतिम चतुर्थ स्थान दिया गया ।
- अल-बिरूनी वैश्य व शूद्रों के मध्य अधिक अन्तर नहीं मानता।

LET'S LEARN TOGETHER

- यद्यपि वर्ग भेद था फिर भी सभी लोग एक साथ ही गाँव या शहर में समरसता के साथ रहते हैं।
- जाति व्यवस्था के विषय में अल बिरूनी का - विवरण उसके नियामक संस्कृत ग्रन्थों के अध्ययन से गहनता से प्रभावित ।
- इन ग्रन्थों में ब्राह्मणों के दृष्टिकोण से जाति प्रथा को संचालित करने वाले नियमों का प्रतिपादन किया गया था।
- वास्तविक जीवन में यह व्यवस्था इतनी कठोर नहीं थी ।
- समाज में सबसे निम्न " अंत्यज श्रेणियों" से अपेक्षा की जाती थी कि वह किसानों व जमींदारों को सस्ता श्रम उपलब्ध करवाये।
- अर्थात् इस वर्ग को भी आर्थिक तंत्र में स्थान दिया गया।

## इब्न बतूता तथा अनजाने को जानने की उत्कंठा

- चौदहवीं शताब्दी में इब्न बतूता भारत आया तब तक पूरा उपमहाद्वीप वैश्विक संचार तंत्र का हिस्सा बन चुका था।
- इब्न बतूता ने स्वयं क्षेत्रों की यात्राएँ की ।
- पवित्र पूजा स्थलों को देखा, कई बार काजी पद पर रहा।
- शहरी केन्द्रों की विश्ववादी संस्कृति का उपयोग, किया, जहाँ अरबी, फारसी, तुर्की व अन्य भाषाएँ बोलने वाले लोग विचारों, सूचनाओं तथा उपाख्यानों का आदान-प्रदान करते थे।
- लेखकों ने जो भी कुछ अपरिचित था उसे विशेष रूप से रेखांकित किया एवं लिखा ।
- ऐसा लेखन श्रोता अथवा पाठक को सुदूर एवं सुगम्य देशों के वृत्तांतों से पूरी तरह प्रभावित करने हेतु लिखा जाता था।

LET'S LEARN TOGETHER

## मानव सिर जैसे गिरिदार फल

नारियल का वर्णन इब्न बतूता इस प्रकार करता है:



ये वृक्ष स्वरूप से सबसे अनोखे तथा प्रकृति में सबसे विस्मयकारी वृक्षों में से एक हैं। ये हू-बहू खजूर के वृक्ष जैसे दिखते हैं। इनमें कोई अंतर नहीं है सिवाय एक अपवाद के एक से काष्ठफल प्राप्त होता है और दूसरे से खजूरानारियल के वृक्ष का फल मानव सिर से मेल खाता है क्योंकि इसमें भी मानो दो आँखें तथा एक मुख है और अंदर का भाग हरा होने पर मस्तिष्क जैसा दिखता है और इससे जुड़ा रेशा बालों जैसा दिखाई देता है। वे इससे रस्सी बनाते हैं। लोहे की कीलों के प्रयोग के बजाय इनसे जहाज़ को सिलते हैं। वे इससे बर्तनों के लिए रस्सी भी बनाते हैं।

## पान

### इब्नबतूता द्वारा दिया गया पान का वर्णन पढ़िए:

पान एक ऐसा वृक्ष है जिसे अंगूर - लता की तरह ही उगाया जाता है;... पान का कोई फल नहीं होता और इसे केवल इसकी पत्तियों के लिए ही उगाया जाता है...



LET'S LEARN TOGETHER

इसे प्रयोग करने की विधि यह है कि इसे खाने से पहले सुपारी ली जाती है; यह जायफल जैसी ही होती है पर इसे तब तक तोड़ा जाता है जब तक इसके छोटे-छोटे टुकड़े नहीं हो जाते; और इन्हें मुँह में रख कर चबाया जाता है। इसके बाद पान की पत्तियों के साथ इन्हें चबाया जाता है।

## इब्न बतूता और भारतीय शहर :-

- इब्न बतूता ने उपमहाद्वीप के शहरों को उन लोगों के लिए व्यापक अवसरों से भरपूर पाया जिनके पास इच्छा, साधन व कौशल था।
- ये शहर घनी आबादी वाले व समृद्ध थे।
- युद्धों, आदि से यह शहर प्रभावित होते थे।
- अधिकांश शहरों में भीड़-भाड़ वाली सड़कें, चमक-दमक वाले रंगीन बाजार जो विविध वस्तुओं से भरे थे।
- इब्न बतूता दिल्ली को भारत में सबसे बड़ा शहर बताता है जिसकी आबादी विशाल थी।
- महाराष्ट्र का दौलताबाद भी आकार में दिल्ली को चुनौती देता था।
- बाजार आर्थिक विनिमय के स्थान ही नहीं थे बल्कि सामाजिक व आर्थिक गतिविधियों के केन्द्र भी थे।
- अधिकांश बाजारों में एक मन्दिर व मस्जिद भी होते थे ।
- इब्न बतूता भारतीय कृषि को अधिक उत्पादनकारी मानता था।

  कारण :-
  - मिट्टी का उपजाऊपन
  - किसानों द्वारा वर्ष में 2 फसलें
- उपमहाद्वीप का व्यापार एशियाई तंत्र में भली भाँति जुड़ा था।
- भारतीय माल की मध्य तथा दक्षिण - पूर्व एशिया, दोनों में बहुत माँग थी। जिससे शिल्पकारों तथा व्यापारियों को भारी मुनाफ़ा होता था ।

LET'S LEARN TOGETHER

- निर्यात :- भारतीय कपड़ों विशेष रूप से सूती
- कपड़ा, महीन मलमल, रेशम, जरी, साटन ।
- महीन रेशम की कुछ किस्में बहुत महँगी होती थी जिसे अमीर वर्ग ही पहन सकता था।

## देहली का वर्णन :-

- तत्कालीन ग्रंथों में दिल्ली को देहली नाम से उद्धृत किया गया।
- दिल्ली बड़े क्षेत्र में फैला घनी आबादी वाला शहर था।
- शहर के चारों ओर बनी प्राचीन अतुलनीय थी।
- दीवार की चौड़ाई ग्यारह (11) हाथ (1 हाथ 20 इंच लगभग) (17.6 फीट)
- दीवार में रात्रि के पहरेदार तथा द्वारपालों के कक्ष थे ।
- प्राचीरों के अन्दर भण्डारगृह थे जिनमें खाद्य सामग्री, हथियार, बारूद आदि सामग्री के भण्डार थे।
- प्राचीर के भीतर सैनिक व घुड़सवार आया जाया करते थे।
- प्राचीर में खिड़कियां थी जो शहर की ओर खुलती थी व उनसे प्रकाश अन्दर आता था।
- प्राचीन का निचला भाग पत्थर व ऊपर का ईटों से बना था।
- इसमें कई मीनारें बनीं थी ।
- 28 द्वार थे जिन्हें दरवाजा कहते थे।
- बदायूँ दरवाजा सबसे विशाल था ।
- माण्डवी दरवाजे में अनाज मण्डी ।
- गुल दरवाजे में फलों का बगीचा ।
- शहर में एक बेहतरीन कब्रगाह जिसमें कई कब्रों पर गुम्बद बने जहां गुम्बद नहीं है वहाँ मेहराब है।
- कब्रगाह में कंदाकार में चमेली या जंगली गुलाब उगाये जाते थे जहाँ सभी मौसम में फूल खिले रहते हैं ।

LET'S LEARN TOGETHER



बस्ती की किलेबंदी की दीवार का एक हिस्सा।

## संचार की एक अनूठी व्यवस्था - इब्न बतूता के अनुसार-

- इब्न बतूता डाक प्रणाली की कार्यकुशलता से विशेष प्रभावित थे।
- व्यापार को प्रोत्साहित करने के लिए राज्य विशेष प्रयास करता था।
- लगभग सभी मार्गों पर सराय व विश्राम गृह बने हुए थे।
- इस व्यवस्था से व्यापारियों को सूचना भेजना, उधार प्रेषित करना व अल्प सूचना पर माल भेजना सुविधाजनक हो गया।
- सिंध से दिल्ली की यात्रा में 50 दिन लगते थे जबकि सुल्तान को सूचना इस डाक व्यवस्था से 5 दिन में ही मिल जाती थी।

## डाक व्यवस्था - घोड़े पर और पैदल

इब्न बतूता ने डाक व्यवस्था का वर्णन निम्नानुसार किया है -

### 1. अश्व डाक व्यवस्था :-

- इसको 'उलुक' नाम दिया गया।
- प्रत्येक चार मील पर स्थापित
- राजकीय घोड़ों द्वारा चालित

### 2. पैदल डाक व्यवस्था :-

- इसमें प्रति मील तीन अवस्थान होते हैं। इसे "दाबा" कहा जाता है और यह एक मील का एक तिहाई होता है।

LET'S LEARN TOGETHER

- प्रत्येक तीन मील पर एक घनी आबादी का गाँव, जिसके तीन मण्डप होते थे। जिसमें लोग कार्य प्रारम्भ के लिए तैयार रहते थे।
- प्रत्येक के हाथ में दो हाथ लम्बी छड़ी होती थी जिसके ऊपर ताँबे की घंटियाँ लगी होती थी ।
- सन्देशवाहक जब यात्रा प्रारम्भ करता था तो एक हाथ में पत्र तथा दूसरे में घंटियों वाली छड़ी लिए अपनी क्षमतानुसार दौड़ता था ।
- मंडप के लोग घंटियों की आवाज से सतर्क हो जाते व सन्देशवाहक से पत्र ले लगले दावा तक दौड़ लगाता और यही क्रम चलता रहता था।
- इब्न बतूता ने पैदल डाक व्यवस्था को अश्व डाक व्यवस्था से तीव्र बताया है।

## बर्नियर तथा अपविकसित पूर्व :-

- बर्नियर की पुस्तक / यात्रा वृत्तान्त : **"ट्रेवल्स इन**
- **द मुगल एम्पायर"**
- बर्नियर व इब्न बतूता के वर्णन में मूलभूत अन्तर है।
- इब्न बतूता ने अपने वर्णन में हर उस चीज को शामिल किया है जो अनूठेपन के कारण उसे प्रभावित करती है।
- बर्नियर ने भारत में जो देखा उसकी तुलना यूरोप से तथा विशेष रूप से फ्रांस से करता था तथा भिन्नता को उजागर करने में अधिक रुचि रखता था।
- उसका विचार नीति-निर्माताओं तथा बुद्धिजीवियों को प्रभावित करने का था जिससे यह सुनिश्चित किया जा सके कि वे ऐसे निर्णय ले जिन्हें वह **"सही"** मानता था।
- बर्नियर द्वारा लिखित ग्रन्थ "ट्रेवल्स इन द मुगल एम्पायर" अपने गहन प्रेक्षण, आलोचनात्मक अंतदृष्टि तथा गहन चिन्तन के लिए उल्लेखनीय है।

LET'S LEARN TOGETHER

- पुस्तक में निरन्तर मुगलकालीन भारत की तुलना यूरोप से की जाती रही है ।
- तथा यूरोप को श्रेष्ठ दिखाने का प्रयास किया गया है।

## भूमि स्वामित्व का प्रश्न :-

- बर्नियर के अनुसार भारत व यूरोप के बीच मूल भिन्नताओं में से एक भारत में **निजी भू-स्वामित्व का अभाव** था।
- उसका निजी स्वामित्व के गुणों में दृढ़ विश्वास था।
- वह भूमि पर राजकीय स्वामित्व को राज्य व निवासियों दोनों के लिए हानिकारक मानता था ।
- उसके अनुसार मुगल साम्राज्य में सम्राट सारी भूमि का स्वामी था जिसे वह अमीरों को बांटता था ।
- इससे अर्थव्यवस्था और समाज के लिए अनर्थकारी परिणाम होते थे ।
- बर्नियर के अनुसार राजकीय भू-स्वामित्व के कारण भूधारक अपने बच्चों को भूमि नहीं दे सकते थे।
- इसी कारण उत्पादन स्तर को बनाये रखने व बढ़ोत्तरी के प्रति उदासीन रहते थे।
- भूमि के रख-रखाव व बेहतरी का प्रयास नहीं हो पाया।
- इस प्रकार निजी भूस्वामित्व के अभाव ने बेहतर भूधारकों के वर्ग के उदय को रोका जो भूमि के रखरखाव व बेहतरी के प्रति सजग रहते ।
- इसी के चलते कृषि का समान रूप से विनाश होता गया ।
- किसानों का असीम उत्पीड़न ।
- समाज के सभी वर्गों के जीवन स्तर में लगातार पतन की स्थिति उत्पन्न हुई सिवाय शासक वर्ग के ।इसी के वर्णन में बर्नियर भारतीय समाज को दरिद्र लोगों के समरूप जनसमूह के रूप में वर्णित करता है ।
- बर्नियर का विश्वास था कि भारत में बहुत अमीर व गरीबों (दरिद्रों) के मध्य की स्थिति के लोग नहीं थे ।

LET'S LEARN TOGETHER

## बर्नियर मुगल साम्राज्य के बारे में लिखता है कि-

- इनका राजा "भिखारियों व क्रूर लोगों" का राजा था।
- इनके शहर विनष्ट तथा खराब हवा से दूषित थे।
- खेत "झाड़ीदार" व "घातक दलदल" से भरे थे ।
- इन सभी का एक मात्र कारण "राजकीय स्वामित्व" था।

## ग़रीब किसान

यहाँ बर्नियर द्वारा ग्रामीण अंचल में कृषकों के विषय में दिए गए विवरण से एक उद्धरण दिया जा रहा है:

हिंदुस्तान के साम्राज्य के विशाल ग्रामीण अंचलों में से कई केवल रेतीली भूमियाँ या बंजर पर्वत ही हैं। यहाँ की खेती अच्छी नहीं है और इन इलाकों की आबादी भी कम है।

यहाँ तक कि कृषि योग्य भूमि का एक बड़ा हिस्सा भी श्रमिकों के अभाव में कृषि विहीन रह जाता है इनमें से कई श्रमिक गवर्नरों द्वारा किए गए बुरे व्यवहार के फलस्वरूप मर जाते हैं। गरीब लोग जब अपने लोभी स्वामियों की माँगों को पूरा करने में असमर्थ हो जाते हैं तो उन्हें न केवल जीवन-निर्वहन के साधनों से वंचित कर दिया जाता है, बल्कि उन्हें अपने बच्चों से भी हाथ धोना पड़ता है, जिन्हें दास बना कर ले जाया जाता है।

इस प्रकार ऐसा होता है कि इस अत्यंत निरंकुशता से हताश हो किसान गाँव छोड़कर चले जाते हैं। इस उद्धरण में बर्नियर राज्य और समाज से संबंधित यूरोप में प्रचलित तत्कालीन विवादों में भाग ले रहा था, और उसका प्रयास था कि मुग़ल कालीन भारत से संबंधित उसका विवरण यूरोप में उन लोगों के लिए एक चेतावनी का कार्य करेगा जो निजी स्वामित्व की "अच्छाइयों" को स्वीकार नहीं करते थे।

LEARN TOGETHER

- एक भी मुगल दस्तावेज यह सूचित नहीं करता कि राज्य ही भूमि का मात्र स्वामी था।
- 16वीं शताब्दी में अकबर का सरकारी इतिहाकार अबुल फजल भूमि राजस्व को "राजत्व का पारिश्रमिक" बताता है ।
- यह राजा द्वारा अपनी प्रजा को सुरक्षा प्रदान करने के बदले की मांग लगती है, न कि " भूमि पर लगान"।

## यूरोप के लिए एक चेतावनी

बर्नियर चेतावनी देता है कि यदि यूरोपीय शासकों ने मुग़ल ढाँचे का अनुसरण किया तो :

उनके राज्य इस प्रकार अच्छी तरह से जुते और बसे हुए, इतनी अच्छी तरह से निर्मित, इतने समृद्ध, इतने सुशिष्ट तथा फलते-फूलते नहीं रह जाएँगे जैसा कि हम उन्हें देखते हैं। दूसरी दृष्टि से हमारे शासक अमीर और शक्तिशाली हैं और हमें यह स्वीकार करना चाहिए कि उनकी और बेहतर और राजसी ढंग से सेवा हो ।

वे जल्द ही रेगिस्तान तथा निर्जन स्थानों के, भिखारियों तथा क्रूर लोगों के राजा बनकर रह जाएँगे जैसे कि वे जिनके विषय में मैंने वर्णन किया है। (मुग़ल शासक) ... हम उन महान शहरों और नगरों को खराब हवा के कारण न रहने योग्य अवस्था में पाएँगे, तथा विनाश की स्थिति में, जिनके जीर्णोद्धार की किसी को चिंता नहीं है, व्यक्त टीले और झाड़ियों अथवा घातक दलदल से भरे हुए खेत, जैसा कि पहले ही बताया गया है।

## बर्नियर के विचारों का प्रभाव

- बर्नियर के विचारों से 18वीं शताब्दी में पश्चिमी विचारक भी प्रभावित हुए ।

- फ्रांसीसी दार्शनिक मॉन्टेस्क्यू ने इसके वृत्तान्त का उपयोग " प्राच्य निरंकुशवाद" के सिद्धांत को विकसित करने में किया ।
- इस सिद्धांत के अनुसार एशिया में शासक अपनी प्रजा पर निर्बाध प्रभुत्व का उपयोग करते थे।
- इससे प्रजा गरीबी में तथा दास बनकर रहती थी ।
- इसके अनुसार भूमि पर राजा का स्वामित्व होता था।
- निजी सम्पत्ति अस्तित्व में नहीं थी ।
- इस दृष्टिकोण से राजा और उसके अमीरों को छोड़कर अन्यों का जीवन यापन बहुत मुश्किल से हो पाता था।
- 19वीं शताब्दी में कार्ल मार्क्स ने इन्हीं सिद्धांतों को आगे बढ़ाया।
- नाम दिया "एशियाई उत्पादक शैली के सिद्धांत" ।
- तर्क दिया कि भारत तथा अन्य एशियाई देशों में उपनिवेशवाद से पूर्व अधिशेष का अधिग्रहण राज्य द्वारा होता था।

### एक अधिक जटिल सामाजिक सच्चाई :-

- बर्नियर के वर्णन में मुगल राज्य को निरंकुश दिखाने का प्रयास किया है।
- उनका विवरण जटिल सामाजिक सच्चाई की ओर इशारा करता है, जैसे –

### शिल्पकारों के बारे में वर्णन किया कि :-

- उनके पास अपने उत्पादों को अच्छा बनाने के लिए कोई प्रोत्साहन नहीं था ।



LET'S LEARN TOGETHER

- क्योंकि राज्य लाभ/मुनाफे का अधिग्रहण कर लेता था इसलिए शिल्पकारों से सम्बन्धित उत्पादन पतनोन्मुख था।
- साथ ही वह यह भी मानता है कि पूरे विश्व से बड़ी मात्रा में बहुमूल्य धातुएँ भारत में आती थी क्योंकि उत्पादों का सोने-चाँदी के बदले निर्यात होता था ।

## व्यापार सम्बन्धित वर्णन में कहा है कि

- व्यापारिक गतिविधियां सुदूर प्रदेशों तक फैली हुई थी।
- पूरे विश्व से बहुमूल्य धातुएं भारत आती थी । उत्पादों का निर्यात सोने-चांदी के बदले होताथा।
- व्यापारिक समुदाय समृद्ध था।

## नगरों का वर्णन-

- 17वीं शताब्दी में कुल जनसंख्या की लगभग 15: प्रतिशत आबादी नगरों में रहती थी।
- यह अनुपात पश्चिमी यूरोप के नगरीय जनसंख्या के अनुपात से अधिक था।
- फिर भी बर्नियर मुगलकालीन शहरों को "शिविर- नगर" कहता है।
- ये शिविर नगर अपने अस्तित्व के लिए राजकीय
- शिविर पर निर्भर रहते थे ।
- ये राजकीय दरबार के आगमन के साथ अस्तित्व में आते थे तथा उनके चले जाने के बाद तेजी से इनका पतन हो जाता था ।

## महिलाऐं : दासियां, सती तथा श्रमिक :-

- अधिकतर यात्री जिन्होंने यात्रा वृत्तान्त लिखे पुरुष थे।
- जिन्हें महिलाओं की स्थिति का विषय रुचिकर व जिज्ञासा पूर्ण लगता था ।
- कभी-कभी वे सामाजिक पक्षपात को सामान्य मान लेते थे, जैसे

LET'S LEARN TOGETHER

- बाजारों में दास/ दासियाँ किसी भी अन्य वस्तु की तरह खुले आम बेचे जाते थे और नियमित रूप से भेंट स्वरूप भी दिए जाते थे।
- इब्न बतूता ने भी सुल्तान मुहम्मद बिन तुगलक को भेंट देने हेतु घोड़े व दास खरीदे थे।
- इब्न बतूता के अनुसार दासों में काफी विभेद हुआ करता था।
- सुल्तान की सेवा में कार्यरत कुछ दासियां संगीत व गायन में कुशल/दक्ष हुआ करती थी । अमीरों पर नजर रखने हेतु सुल्तान दासियों को नियुक्त करता था।
- दासों का उपयोग घरेलू श्रम में भी किया जाता था।
- पालकी या डोले में महिलाओं व पुरुषों को ले जाने का कार्य दास करते थे ।
- घरेलू दासों की कीमत बहुत कम होती थी।
- अधिकांश परिवार दास रखने में समर्थ होते थे। कम से कम 1-2 दास रखते थे।

## दासियाँ :-

**इब्न बतूता अपने वर्णन में बताते हैं कि :-**

- सम्राट हर छोटे या बड़े अमीर के साथ अपने एक दास को रखता था जो सम्राट के लिए जासूसी का कार्य करते थे।
- वह महिला सफाई कर्मचारियों को भी नियुक्त करता था जो बिना बताये घर में घुस जाती थी। वे दासियों से सूचनाऐं प्राप्त कर लेती थी।
- दासियों को लूट, हमलों व अभियानों के दौरान बलपूर्वक प्राप्त किया जाता था।

## बर्नियर तथा सती प्रथा :-

- सती प्रथा के वर्णन को बर्नियर ने मुख्य रूप से चुना।
- सती प्रथा में कुछ महिलाऐं प्रसन्नता से मृत्यु को चुन लेती थीं तथा अन्य को सती होने के लिए बाध्य किया जाता था ।

## सती बालिका :-

**बर्नियर के वृत्तान्तों में लाहौर की घटना का वर्णन सबसे मार्मिक है। उसके अनुसार :-**

- बर्नियर ने लाहौर में 12 वर्ष की एक सुन्दर अल्प व्यस्क विधवा को सती होते देखा ।
- उस भयानक नर्क की ओर जाते समय व असहाय बच्ची जीवित से अधिक मृत प्रतीत हो रही थी । वह काँपते हुए बुरी तरह रो रही थी ।
- कुछ लोग उसे जबरदस्ती पकड़ कर उस घातक स्थान की ओर ले जाकर लकड़ियों पर बैठा देते हैं।
- उसके हाथ व पैर बांध दिये ताकि भाग न पाये। इस स्थिति में उस मासूम को जिन्दा जला दिया गया।
- इब्न बतूता कहता है कि "मैं अपनी भावनाओं को दबाने में और उनके कोलाहलपूर्ण तथा व्यर्थ के क्रोध से बाहर आने से रोकने में असमर्थ था ।"

Download MISSION GYAN App Now from Play Store